बी.एच.डी.सी.–103 / आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

स्नातक उपाधि प्रतिष्ठा (सी.बी.सी.एस.)
(बी.ए.ऑनर्स)

सत्रीय कार्य
(जनवरी 2021 तथा जुलाई, 2021 सत्र के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी–103
आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103 / बी.ए.ऑनर्स

प्रिय छात्र / छात्राओ!

'आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरभं करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

   अनुक्रमांक : ....

   नाम : ....

   पता : ....

   ....

   पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

   सत्रीय कार्य कोड : ....

   अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ....

   दिनांक : ....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :
जनवरी 2021 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2021
जुलाई 2021 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2022

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं।
उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
2. **विशेष** : अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता
सत्रीय कार्य
(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103 / बी.ए.जी.
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी.–103 / 2021–22
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य है। दस अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग आठ सौ शब्दों में तथा पाँच अंकों के प्रश्नों के उत्तर लगभग चार सौ शब्दों में दीजिए।

भाग–1

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10X4=40

(क) काहे को ब्याही बिदेस रे, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहुकत घर–घर जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा चुगत उड़ि जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ,
जो मांगे चली जाऊं, लखि बाबुल मोरे ।
हम तो बाबुल तोरे खूटे की गइया,
जित हांको हंक जाऊं, लखि बाबुल मोरे।

(ख) हंमकौ मिला जिआवनहारा।
साकत मरहिं संत जन जीवहिं। भरि भरि रांम रसांइन पीवहिं।।
हरि मरिहै तौ हंमहूं मरिहैं। हरि न मरै हंम काहे कौ मरिहैं।।
कहै कबीर मन मनहिं मिलावा। अमर भए सुखसागर पावा।।

(ग) मेरे मन राम नाम बसी।
तेरे कारण स्याम सुन्दर, सकल लोगाँ हँसी।।
कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे कुल नासी।
कोई कहै मीरा दीप आगरी नाम पिया सूँ रसी।।
खाण्ड धार भक्ति की न्यारी, काटि है जम फाँसी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सबद सरोवर धाँसी।।

(घ) या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यों ज्यौं बूड़ै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ।

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अली कली ही सौं बँध्यो, आगैं कौन हवाल।

बतरस–लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ।

भाग–2

2. विद्यापति के समय और रचना संसार का परिचय दीजिए। 10

3. 'जायसी के काव्य में लोकजीवन' विषय पर विचार कीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5X2=10
   (क) तुलसीदास की भक्ति का स्वरूप
   (ख) सूरदास की कविता में श्रृंगार

भाग–3

5. बिहारी की काव्यभाषा और काव्य रूप पर प्रकाश डालिए। 10

6. रसखान की कविता में निहित प्रेम और भक्ति की विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 10

7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5X2=10
   (क) रहीम की कविता का भाव पक्ष
   (ख) नज़ीर अकबराबादी की कविताओं में उत्सवधर्मिता